नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और आत्मनिर्भर भारत (महात्मा गांधी के चिंतन पर आधारित एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

डॉ. रश्मि दुबे
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोतर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भर भारत का प्रमुख आधार है महात्मा गांधी के शिक्षा के विचार आत्मनिर्भरता की संकल्पना पर आधारित थे। मानव जाति शांति, प्रगति, समृद्धि और आध्यात्मिक गौरव प्राप्त करने में सक्षम हो शिक्षा के यही स्वरूप की गांधी जी ने कल्पना की थी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गांधी जी की शिक्षा नीति दोनो में ही समानता के महत्व को स्वीकारा गया है। गांधी जी की शिक्षा व नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति दोनों का उदेश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है। गांधी जी का विचार था कि यदि देश को आत्मनिर्भर बनाना है तो शिक्षा, उद्योग, हुनर और स्वास्थ्य इन चारों का समन्वय होना चाहिये। गांधी जी की शिक्षा प्रणाली में पांच आई का समावेश समाहित है इंडियन (भारतीय), इंटरनेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय), इंपेक्टफुल (प्रभावकारी), इंटरएक्टिव (अंतः क्रियात्मक) और इन्क्लूसिव (समावेशी), नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन्ही बातों का समावेश कर भारत को आत्म निर्भर बनाने की बात कही गई है ।

मुख्य शब्द - शिक्षा नीति, आत्मनिर्भर, बुनियादी शिक्षा, कौशल शिक्षा।

शिक्षा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक शिक्षा देता है और शिक्षार्थी या विद्यार्थी शिक्षा गृहण करते हैं। शिक्षा और शिक्षण की प्रक्रिया बहुत जटिल है शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिये कुछ सिद्धांत बनाये जाते है और सिद्धांत को मूर्त रूप देने के लिये जिस प्रक्रिया का पालन किया जाता है उसे शिक्षा प्रबंधन कहते है।

शिक्षा प्रबंधन में देश के लिये उत्कृष्ट श्रेणी के विद्यार्थी तैयार कैसे किये जाये इस पर पुरजोर बल दिया जाता है। शिक्षा एक सुनियोजित क्रिया है, परन्तु यदि उसका उद्देश्य ही कुछ न हो तो वह महत्व हीन बन कर रह जाती है। भारतीय संविधान के भाग चार में नीति निर्देशक तत्वों में इस बात का उल्लेख है कि प्राथमिक स्तर तक के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाये फिर 1948 में डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया तथा उसी समय से भारत में शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित करने का काम शुरू किया गया।

1952 में लक्ष्मण स्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में गठित माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा 1964 में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर 1968 में शिक्षा नीति पर एक प्रस्ताव

प्रकाशित किया गया जिसमें राष्ट्रीय विकास के प्रति वचन वद्ध, चरित्रवान तथा कुशल युवा तैयार करने का लक्ष्य रखा गया नई 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई थी उसके बाद 34 वर्षो बाद 2020 में नई शिक्षा नीति लागू की गई। मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरीयाल और मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने नई शिक्षा नीति की जानकारी के साथ - साथ मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय (MHRD) का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया इस नीति का मुख्य उद्देश्य सन् 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% जी. ई. आर के साथ माध्यामिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य रखा गया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को यदि भविष्य के आत्मनिर्भर भारत की पीठिका कही जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नई शिक्षा नीति 2020 में आत्मनिर्भरता की संकल्पना कोई नई बात नहीं है। महात्मा गांधी ने भी इसे अपने चिंतन व व्यवहार में शामिल किया था। आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन की संकल्पना गांधी जी की जीवन दृष्टि का सार तत्व है। वर्तमान में कोरोना संकट से जूझ रहे विश्व ने आत्मनिर्भरता की संकल्पना को पुनः विमर्श के केन्द्र में ला दिया ऐसे में नई शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भर भारत के संदर्भ में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इसमें व्यवसायिक, शिक्षा कला, कौशल शिक्षा, हस्तकला लोकविद्या इत्यादि को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। हम जैसा राष्ट्र का नागरिक बनाना चाहते हैं वैसी ही शिक्षा का स्वरूप होना चाहिये। गांधी जी के अनुसार - उद्योग, हुनर तंदुरूस्ती और शिक्षा इन चारों का सुन्दर समन्वय होना चाहिये यदि देश को आत्म निर्भर बनाना है तो हमारे देश के छात्र, युवा और गांव को आत्मनिर्भर बनाना होगा। महात्मा गांधी के इसी सिद्धांतों को आधार मानते हुये आज की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वरूप भी है महात्मा गांधी बुनियादि शिक्षा के समर्थक थे। वे बच्चों की निः शुल्क शिक्षा की बात करते थे। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा भाषा हो उनका ऐसा मानना था कि बच्चों के मानसिक विकास व चिंतन के लिये मातृभाषा में शिक्षा अनिवार्यतः होना चाहिये क्योंकि शिक्षा में घर की भाषा को स्कूल की भाषा बनाना बच्चों के लिये लाभदायक सिद्ध होगा। महात्मा गांधी शिल्पशिक्षा के समर्थक थे उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी को एक शिल्पकार जैसा बनाना चाहिये जिससे वह अपनी शैक्षिक कला का उपयोग रोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनने में कर सके। गांधी जी की शिक्षा में शिल्प, कृषि, कटाई, बुनाई, लकड़ी, चमड़े का काम, मिट्टी का काम, पुस्तक कला, मछली पालन, बागवानी, शारीरिक शिक्षा को शामिल किया गया था। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो इंन्द्रियों को वश में करना सिखाये, व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाये तथा स्वतंत्र जीवन जीना सिखाये, आत्म निर्भरता का तात्पर्य है स्वयं पर निर्भर होना और स्वयं पर निर्भर होने का आधार है स्वदेशी, महात्मा गांधी ने स्वदेशी शब्द को समझाते हुये बताया था कि हमारी वह भावना जो अपने ही देश द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग और सेवा करना सिखाता है। स्वदेशी को गांधी जी धार्मिक सिद्धांत मानते थे और कहते थे कि इसका पालन सब लोगों को करना चाहये।

गांधी जी की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना उन्होंने इसी बात पर जोर देते हुये कहा था कि शिक्षा के तीन आयाम हैं, हैंड, हेट एण्ड हार्ट अर्थात हैंड - बालक हाथ से काम करना सीखे, हेट - उसकी बौद्धिक क्षमता का विकास हो, हार्ट - बालक संवेदन शील बने।

इस प्रकार हम जब गांधी जी की आत्मनिर्भर बुनियादी शिक्षा का अध्ययन करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता हैं कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी गांधी जी की शिक्षा के सिद्धांतो पर ही आधारित है इसे निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है।

- महात्मा गांधी ने बच्चों की अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा पर जोर दिया था, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी बच्चों को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की बात का उल्लेख है।
- गांधी जी ने हमेशा शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये इस बात पर बल दिया, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी क्षेत्रीय भाषा को महत्व दिया गया है।
- गांधी जी की शिक्षा का उद्देश्य शिल्प अर्थात रोजगार स्वरोज - गार की शिक्षा से थे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी व्यवसायिक शिक्षा, कौशल विकास स्वास्थ्य शिक्षा आदि का समावेश किया गया है।'
- महात्मागांधी की शिक्षा नीति और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों में आत्मनिर्भर भारत की बात को स्वीकारा गया है तथा शिक्षा के द्वारा बालक को आत्मनिर्भर बनाने की बात को स्पष्ट किया है।
- सर्वोदय शिक्षा की बात को गांधी जी की शिक्षा नीति तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति दोनों में आधार बनाया गया।
- महात्मा गांधी की शिक्षा नीति में धर्म आधारित शिक्षा का कोई महत्व नही था, नई शिक्षा नीति भी धर्म आधारित शिक्षा के खिलाफ है।
- महात्मा गांधी कहते थे कि व्यक्ति को अधिकारों से ज्यादा कर्तव्यों पर अधिक ध्यान देना चाहिये इसी प्रकार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अधिकारों के साथ-साथ बालकों को मौलिक कर्तव्य सिखाने पर बल दिया गया है।

इस प्रकार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महात्मा गांधी के विचारों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। आज जो नई शिक्षा नीति 2020 बनी है महात्मा गांधी ने आज से 100 साल पहले इसी प्रकार की कल्पना की थी। आज नई शिक्षा नीति 2020 में, बहुभाषावाद और भाषा, जीवन कौशल नैतिकता, और मानव संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच, आदि को वढ़ावा देने के बारे में हम महात्मा गांधी के विचार और विश्वास को देखते हैं। गांधी जी द्वारा मन, शरीर और आत्मा के विकास को नई शिक्षा नीति में पूर्णतया स्वीकारा गया है। गांधी जी की शिक्षा का दर्शन मानव जाति को शांति, प्रगति समृद्धि और आध्यात्मिक गौरव के मार्ग पर ले जाने में सक्षम है। और नई शिक्षा नीति में भी गांधी जी के सपनों को साकार करते हुये भारत के प्रत्येक शिक्षित नागरिक को आत्मानिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसी आत्मनिर्भरता से देश मजबूत व सशक्त होगा।

सन्दर्भ -

1 रामनाथ शर्मा व राजेन्द्र कुमार : शैक्षिक समाजशास्त्र अटलांटिक पब्लिकेशन, 2006

2 प्रो. मधु सूदन त्रिपाठी : शिक्षा प्रबंधन का विश्वकोष खण्ड 5 आमेगा पब्लिकेशन, 2015

3 डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा शिक्षा का सिद्धांत एवं आधुनिक भारत की शिक्षा, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर 2008

4 डॉ. नरेश कुमार, राष्ट्रीय शिक्षा, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली 2001

5 प्रो. एस. पी. गुप्ता एवं डा. अल्का गुप्ता भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक, भवन, इलाहाबाद 2009

6 पूनम मदान भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास एवं समस्यायें, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2012

7 हिन्दुस्तान टाइम्स, 30 जुलाई 2020

❖ ❖ ❖